"सतत आजिविका हेतु कृषि वानिकी" विषय पर हिमालयन वन अनुसन्धान, शिमला द्वारा वन विज्ञान केंद्र, मनाली में एक दिविसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 27.10.2016 को वन-विज्ञान केंद्र, ब्रूणधार, मनाली, जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में, **"सतत आजीविका हेतु कृषि-वानिकी"** विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें जिला कुल्लू के लगभग 30 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए श्री बी.एल. नेगी, अरण्यपाल, कुल्लू ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह संस्थान, *वानिकी अनुसंधान* के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा हितधारकों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान कार्य का उनका समाधान करता है। अपने संबोधन में नेगी ने कहा कि मानव-जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण वनों पर अत्यधिक दबाव होने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है की ऐसी कृषि पद्धति अपनाई जाए जिससे खाद्यान, लकड़ी व चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे| इसी पद्धति को ***कृषि-वानिकी*** के नाम से भी जाना जाता है, वर्तमान समय में इसका महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे वैज्ञानिकों के अनुभवों का लाभ उठाएं तथा आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से जिला कुल्लू के किसान तथा बागवान अवश्य ही लाभान्वित होंगे तथा वानिकी, विशेषकर औषधीय पौधों की खेती अपनाने की ओर आकर्षित होंगे जो उनकी आय में बढ़ोतरी करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि व

प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया तथा संस्थान की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की । श्री भारद्वाज ने कहा कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही कृषि में फसलों एवं पशुओं के साथ वृक्षों को सम्मिलित किया जाता रहा है । कृषि क्षेत्र में कृषिवानिकी एक महत्वपूर्ण कृषि पद्धति है, जिसका महत्व आज के समय में बहुत प्रासंगिक है । आज के आधुनिक युग में भी कृषि-वानिकी द्वारा आम किसान लाभ उठा सकते हैं । कृषि-वानिकी भूउपयोग की वह पद्धति है जिससे सामाजिक तथा पारिस्थितिक रूप से उचित वनस्पतियों के साथ-साथ कृषि फसलों के साथ वृक्षों को भी उगाया जाता है । इस प्रणाली द्वारा उत्पाद के रूप में ईंधन की लकड़ी, हरा चारा, अन्न, मौसमी फल इत्यादि आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं । इस प्रणाली को अपनाने से भूमि की उपयोगिता भी बढ़ जाती है। उन्होंने आगे बताया कि संस्थान द्वारा अनुसंधान परिणामों को हितधारकों तक पहुँचाना भी संस्थान के मुख्य उद्देश्यों में से एक है तथा इसी कड़ी में आज इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है ।

इस एक दिविसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक तथा श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल नें पौधशाला एवं पोली-हाउस की स्थापना तथा वर्मी-कम्पोस्ट तकनीक का प्रदर्शन; महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान एवं इनके उपयोग; औषधीय पौधों के निर्यात सम्बन्धी नीति एवं नियम, महत्वपूर्ण सम-शीतोषण औषधीय पौधों का प्रवर्धन एवं व्यवसायिक खेती, कृषि-वानिकी तकनीकों से उत्पादकता एवं ग्रामीण आर्थिकी में वृद्धि, इत्यादि विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की ।

प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान द्वारा स्थापित पौधशाला में उगाये गए पौधों, विशेषकर औषधीय पौधों, तथा इनकी कृषिकरण तकनीकों के बारे विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी । आयोजकों ने किसानों को आश्वस्त किया कि यदि भविष्य में वह कृषि-वानिकी, विशेषकर औषधीय पौधों की खेती की ओर आकर्षित होते हैं तो संस्थान इस विषय में उनकी सहायता हेतु हर संभव प्रयास करेगा । कार्यक्रम के अंत में श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि आज उन्होंने जो कुछ भी इस प्रशिक्षण से सीखा है उससे वह अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

मीडिया कवरेज

जानकारी

कुल्लू में कृषि-वानिकी विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

औषधीय पौधों की खेती बढ़ाएगी आय

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा गुरुवार को वन-विज्ञान केंद्र रूणधार, मनाली जिला कुल्लू में सतत आजीविका हेतु कृषि-वानिकी विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कुल्लू के लगभग 30 किसानों तथा बागबानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बीएल नेगी अरण्यपाल कुल्लू ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह संस्थान वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। श्री नेगी ने कहा कि मानव जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण वनों पर अत्यधिक दबाव होने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है की ऐसी कृषि पद्धति अपनाई जाए, जिससे खाद्यान, लकड़ी व चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे। इसी पद्धति को कृषि-वानिकी के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में इसका महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि वे वैज्ञानिकों के अनुभवों का लाभ उठाएं। इस प्रकार के प्रशिक्षण से कुल्लू

के किसान तथा बागबान अवश्य ही लाभान्वित होंगे तथा वानिकी, विशेषकर औषधीय पौधों की खेती अपनाने की ओर आकर्षित होंगे। ऐसे प्रयास किसानों तथा बागबानों की आय में बढ़ोतरी करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रदीप भारद्वाज उप-अरण्यपाल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने मुख्यातिथि व प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया तथा संस्थान की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि कृषि-वानिकी बहुउपयोग की वह पद्धति है, जिससे सामाजिक तथा पारिस्थितिक रूप से उचित

■ वैज्ञानिकों ने किसानों बागबानों को बांटा ज्ञान

वनस्पतियों के साथ-साथ कृषि फसलों के साथ वृक्षों को भी उगाया जाता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डा. संदीप शर्मा, डा. जगदीश सिंह, प्रदीप भारद्वाज ने पौधशाला एवं पोलीहाउस की स्थापना, वर्मी-कंपोस्ट तकनीक का प्रदर्शन, महत्त्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान, महत्त्वपूर्ण सम-शीतोषण औषधीय पौधों का प्रबंधन, व्यावसायिक खेती, कृषि-वानिकी तकनीकों से उत्पादकता व ग्रामीण आर्थिकी में वृद्धि इत्यादि विषयों पर जानकारी प्रदान की।

दिव्य हिमाचल Fri, 28 October 2016
epaper.divyahimachal.com/c/14243389

दिव्य हिमाचल

स्टेट स्कैन आपका

जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण जरूरी

अरण्यपाल बीएल नेगी ने सराहे हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के प्रयास

प्रतिनिधि

मनाली, 27 अक्तूबर। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा गुरुवार को वन विज्ञान केंद्र ब्रजधार मनाली सतत आजीविका हेतु कृषि-वानिकी विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें जिला कुल्लू के लगभग 30 किसानों तथा बागबानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बीएल नेगी, अरण्यपाल कुल्लू वन वृत ने हिमालयन वन अनुसंधन संस्थान, शिमला के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह संस्थान,वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा अपने कार्यक्रमों में हितधारकों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दे रहा है। अपने संबोधन में नेगी ने कहा कि मानव-जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। वनों की कटाई, पानी की कमी विभिन्न जैसे कारकों द्वारा मृदा का क्षरण होने से पर्यावरण है संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा । इसके लिए आवश्यक है कि ऐसी कृषि पद्धति अपनाई जाए जिससे खाद्यान,लकड़ी व चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे । इसी पद्धति को कृषि -वानिकी के नाम से भी जाना जाता है ,वर्तमान समय में इसका महत्व् दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे वैज्ञनिकों के अनुभवों का लाभ उठाएं तथा आशा व्यत्क की कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से जिला कुल्लू के किसान तथा बागवान अवश्य ही लाभान्वित होंगे तथा वानिकी, विशेषकर औषधीय पौधों की खेती अपनाने की ओर आकर्षित होगें तथा ऐसे प्रयास किसानों की आय मे बढ़ोतरी करने मे सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रदीप भारद्वारा उप - अरण्यपाल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला नें प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया तथा प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान की गातिविधियो के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। भारद्वाज ने आगे बताया कि हमारे देश मे प्राचीन काल से ही कृषि में फसलों एवं पशुओं के साथ वृक्षें को सम्मिलित किया जाता रहा है। कृषि क्षेत्र में कृषिवानिकी एक महत्वपूर्ण कृषि पद्धति है,जिसका आज भी उतना ही महत्व है। आज के आधुनिक युग मे भी कृषि -वानिकी द्वारा आम किसान लाभ उठा सकते हैं। कृषि फसलों के साथ वृक्षों को भी उगाया जाता है। इस प्रणाली द्वारा उत्पाद के रूप में ईंधन की लकड़ी, हरा चारा,अन्न ,मौसमी फ्ल इत्यादि आसानी से उपलब्ध हो जाते है। इस प्रणाली को अपनाने से भूमि की उपयोगिता भी बढ़ जाती है। उन्होंने आगे बताया कि संस्थान द्वारा अनुसंधान परिणामों को हितधारकों तक पहुंचाना भी संस्थान के मुख्य उद्देश्यो मे से एक है तथा इसी कड़ी में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भी किया जा रहा है। इस एक दिविसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान ,डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. जगदीश सिंह वैज्ञानिक तथा प्रदीप भारद्वाज, उप अरण्यपाल ने पौधशाला एवं पॉली-हाउस की स्थापना तथा वर्मी-कम्पोस्ट तकनीक का प्रदर्शन महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का पहचान एवं इनके उपयोग औषधीय पौधों के निर्यात संबंधी नीति एवं नियम, महत्वपूर्ण सम-शीतोषण औषधीय पौधों का पवर्धन एवं व्यवसायिक खेती ,कृषि-वानिकी तकनीकों से उत्पादकता एवं ग्रामीण आर्थिकी में वृद्धि, इत्यादि विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

आपका फैसला

मानव जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक: नेगी

मनाली (कुल्लू)। पर्यटन नगर मनाली में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा बीरवार को सतत आजीविका विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर अरण्यपाल कुल्लू बीएल नेगी ने कहा कि मानव जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। ऐसे में वनों की कटाई तथा पानी का कम होना पर्यावरण के लिए घातक है। इसके लिए ऐसी कृषि पद्धति अपनाने की जरुरत है जिससे खाद्यान्न, लकड़ी और चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के उप-अरण्यपाल प्रदीप भारद्वाज ने कहा कि देश में प्राचीन काल से ही कृषि में फसलों एवं पशुओं के साथ वृक्षों को सम्मलित किया जाता रहा है। इसके अलावा शिविर में डॉ संदीप शर्मा, डॉ जगदीश सिंह ने पौधशाला एवं पॉली हाउस की स्थापना तथा वर्मी कंपोस्ट तकनीक का प्रदर्शन, महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का पहचान एवं इनके उपयोग, औषधीय पौधों के निर्यात संबंधी नीति एवं नियम आदि विषयों के बारे में बताया। ब्यूरो

अमर उजाला

लगातार बिगड़ता जा रहा पर्यावरण संतुलन : नेगी

मनाली : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से सतत आजीविका के लिए कृषि-वानिकी विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिला कुल्लू के लगभग 30 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ बीएल नेगी अरण्यपाल कुल्लू वन वृत ने किया। उन्होंने कहा कि वनों की कटाई, पानी की कमी विभिन्न कारकों से मृदा का क्षरण होने से पर्यावरण संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है कि ऐसी कृषि पद्धति अपनाई जाए, जिससे खाद्यान, लकड़ी व चारा आदि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे। उप अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला प्रदीप भारद्वाज ने सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. जगदीश सिंह भी महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

दैनिक जागरण

एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

मनाली, 27 अक्तूबर (राजअग्रवाल) : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा वन विज्ञान केन्द्र ब्रजधार मनाली सतत आजीविका हेतु कृषि वानिकी विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिला कुल्लू के लगभग 30 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए बीएल नेगी, अरण्यपाल कुल्लू वन वृत ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह संस्थान, वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा अपने कार्यक्रमों में हितधारकों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता दे रहा है। अपने संबोधन में नेगी ने कहा कि मानव-जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। वनों की कटाई, पानी की कमी विभिन्न जैसे कारकों द्वारा मृदा का क्षरण होने से पर्यावरण संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा। इसके लिए आवश्यक है कि ऐसी कृषि पद्धति अपनाई जाए जिससे खाद्यान, लकड़ी व चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे। इसी पद्धति को कृषि-वानिकी के नाम से भी जाना जाता है, वर्तमान समय में इसका महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे वैज्ञानिकों के अनुभवों का लाभ उठाएं तथा आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से जिला कुल्लू के किसान तथा बागवान अवश्य ही लाभान्वित होंगें तथा वानिकी, विशेषकर औषधीय पौधों की खेती अपनाने की ओर आकर्षित होंगें तथा ऐसे प्रयास किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया तथा प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। भारद्वाज ने आगे बताया कि हमारे देश मे प्राचीन काल से ही ऋषि में फसले एवं पशुओं के साथ वृक्षों के सम्मिलित किया जाता रहा है। कृषि क्षेत्र में कृषि वानिकी एक महत्वपूर्ण कृषि पद्धति है, जिसका आज भी उतना ही महत्व है। इस एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. जगदीश सिंह वैज्ञानिक तथा प्रदीप भारद्वाज, उप अरण्यपाल ने पौधशाला एवं पॉली-हाउस की स्थापना तथा वर्मी-कम्पोस्ट तकनीक का प्रदर्शन, महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का पहचान एवं इनके उपयोग, औषधीय पौधों के निर्यात सम्बन्धी नीति एवं नियम, महत्वपूर्ण सम-शीतोष्ण औषधीय पौधों का प्रवर्धन एवं व्यवसायिक खेती ,कृषि-वानिकी तकनीकों से उत्पादकता एवं ग्रामीण आर्थिकी में वृद्धि, इत्यादि विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

अजीत समाचार